विश्वविद्यालय परिचय

गुरुकुल काँगड़ी (सम-विश्वविद्यालय), हरिद्वार में स्थित, भारत की एक ऐतिहासिक शिक्षण संस्था है। इसकी स्थापना स्वामी महर्षि दयानन्द के शिष्य महान् संन्यासी, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 04 मार्च 1902 को हरिद्वार के गंगा तट पर इसकी नींव रखी। इसका मुख्य उद्देश्य मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के विरुद्ध एक राष्ट्रीय विकल्प प्रस्तुत करना था। यह संस्था प्राचीन भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करने और छात्रों को अपनी वैदिक संस्कृति से जोड़े रखने के ध्येय के साथ शुरू हुई। इसका लक्ष्य आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भारतीय संस्कारों और वैदिक-मूल्यों के साथ जोड़कर एक समग्र शिक्षा प्रदान करना है, जहाँ विद्यार्थी किताबी ज्ञान के साथ-साथ चारित्रिक और नैतिक विकास भी कर सकें।

इस विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली छात्रों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर केन्द्रित है। यहाँ वैदिक साहित्य, संस्कृत, दर्शन और योग के साथ-साथ विज्ञान, मानविकी और प्रबन्धन जैसे आधुनिक विषयों का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसके विशिष्ट योगदान को देखते हुए, भारत सरकार द्वारा इसे सन् 1962 में 'सम-विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान किया गया। आज भी यह संस्थान अपनी अनूठी पहचान के साथ भारतीय संस्कृति और आधुनिक शिक्षा के संगम के रूप में एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है।

सङ्गोष्ठी की अवधारणा

उन्नीसवीं शताब्दी का भारत सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वास, जातिगत भेदभाव और पराधीनता से जकड़ा हुआ था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म और संस्कृति के मूल स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठित करने का साहसिक प्रयास किया। उनका उद्घोष *"वेदों की ओर लौटो"* केवल धार्मिक आह्वान नहीं था, बल्कि एक समग्र सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव थी। महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास और रूढ़ियों का विरोध करते हुए समाज को तर्क, विज्ञान और विवेक पर आधारित जीवन-दृष्टि प्रदान की। उन्होंने स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह और समानता के अधिकारों का समर्थन किया तथा जातिवाद और छुआछूत जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष किया। उनका महान ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' आज भी सामाजिक और धार्मिक विमर्श का आधार है।

शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित आर्य समाज ने गुरुकुलों और डी.ए.वी. संस्थानों के माध्यम से राष्ट्र के भावी नागरिकों के निर्माण में अमूल्य योगदान दिया। साथ ही, उनके विचारों ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और राष्ट्रवाद की चेतना को भी बल प्रदान किया। यह संगोष्ठी महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व और कृतित्व की बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसमे उनके वैदिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार, शिक्षा-दर्शन और राष्ट्रनिर्माण में योगदान की प्रासंगिकता पर गहन विमर्श होगा। इस विमर्श का उद्देश्य न केवल इतिहास को समझना है, बल्कि वर्तमान समय की चुनौतियों के समाधान हेतु उनके विचारों से दिशा प्राप्त करना भी है।

आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. डॉ. हेमलता. के.
माननीया कुलपति
गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय)

सह संरक्षक
प्रो. विपुल शर्मा
कुलसचिव
गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय)

अध्यक्ष
प्रो. ब्रह्मदेव
संकायाध्यक्ष
शिक्षा एवं प्रशिक्षण संकाय
गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय)

संयोजक
डॉ. रविन्द्र कुमार
सहायक प्रोफेसर
गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय)
मो.: **9868077342**

सह-संयोजक
डॉ. दीपक कुमार
अध्यक्ष
गुहार
मो.: **9560931074**

आयोजन सचिव
डॉ. बबलू वेदालङ्कार
सहायक प्रोफेसर
गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय)
मो.: **7500008505**

Hybrid Mode
Offline & Online

ओ३म्

ओ३म्

भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी

"आर्ष भारत पुनर्जागरण के नायक : महर्षि दयानन्द सरस्वती"

07-08 नवम्बर 2025

गुरुकुल काँगड़ी (सम विश्वविद्यालय)
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

स्थान- महर्षि दयानन्द सभागार, संस्कृत विभाग, मुख्य परिसर, गुरुकुल काँगड़ी (सम विश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड

सङ्गोष्ठी के उप-विषय

1. दार्शनिक एवं वैदिक चिन्तन

- महर्षि दयानन्द की वेद-भाष्य शैली और उसकी विशिष्टता।
- "वेदों की ओर लौटो": वर्तमान सन्दर्भ में विश्लेषण।
- एकेश्वरवाद की स्थापना और मूर्तिपूजा का तार्किक खण्डन।
- 'सत्यार्थ प्रकाश' का दार्शनिक मूल्याङ्कन और भारतीय समाज पर उसका प्रभाव।
- आर्ष भारत की अवधारणा : महर्षि दयानन्द की दृष्टि में भारत का आदर्श स्वरूप।
- आर्य समाज की स्थापना : उद्देश्य, संरचना और राष्ट्र निर्माण में भूमिका।

2. सामाजिक सुधार एवं महिला सशक्तिकरण

- जाति-प्रथा का खण्डन और गुण-कर्म-स्वभाव आधारित वर्ण-व्यवस्था का समर्थन।
- छुआछूत, बाल-विवाह और अन्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में दयानन्द का योगदान।
- नारी शिक्षा और विधवा-विवाह के प्रबल समर्थक के रूप में महर्षि दयानन्द।
- शुद्धि आन्दोलन : सामाजिक समानता की दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम।
- आर्य समाज द्वारा सञ्चालित सामाजिक सुधार आन्दोलनों का मूल्याङ्कन।

3. राष्ट्रीय चेतना एवं स्वराज

- स्व-भाषा, स्व-संस्कृति और स्व-देश के प्रथम उद्घोषक के रूप में महर्षि दयानन्द।
- "स्वराज" के प्रथम मन्त्रद्रष्टा और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम पर उनका प्रभाव।
- राष्ट्रीय आत्म-गौरव की पुनर्स्थापना में दयानन्द के विचारों की भूमिका।
- महर्षि दयानन्द के राष्ट्रवादी चिन्तन का भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों पर प्रभाव।

4. शिक्षा एवं संस्थान निर्माण

- महर्षि दयानन्द की शिक्षा-नीति : गुरुकुल प्रणाली और आधुनिक शिक्षा का समन्वय।
- भारतीय शिक्षा दर्शन एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020
- डी.ए.वी. (दयानन्द एंग्लो-वैदिक) शिक्षण संस्थानों का भारत में योगदान।
- पाखण्ड खण्डिनी पताका: धार्मिक और सामाजिक आडम्बरों पर एक वैचारिक प्रहार।

5. समकालीन प्रासङ्गिकता

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महर्षि दयानन्द के विचारों का महत्त्व।
- 21वीं सदी की राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों के समाधान में वैदिक-दर्शन की भूमिका।
- पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण के सन्दर्भ में वैदिक जीवन शैली की प्रासङ्गिकता।
- आधुनिक भारत में चरित्र-निर्माण और नैतिक मूल्यों की स्थापना में दयानन्द के विचारों की उपयोगिता।

नोट: प्रतिभागी उपर्युक्त विषयों से अतिरिक्त सङ्गोष्ठी के विषय से प्रासङ्गिक कोई अन्य विषय चुन सकते हैं।

Registration Fee		
Category	Faculty Member	Research Scholar
Registratoion Fee	₹ 1000	₹ 750

Registration Form QR	Fee Payment QR (UPI)

शोध पत्र के लिए दिशानिर्देश

- शोध पत्र का सारांश लगभग 300-350 शब्दों में; पूर्ण शोध पत्र की शब्द सीमा 3000-4000 शब्दों में होना चाहिए। इसमें शोध का उद्देश्य, प्रयुक्त पद्धति और प्रमुख निष्कर्ष स्पष्ट रूप से उल्लिखित हों। कृपया सारांश के साथ 4-5 प्रमुख शब्द (Keywords) भी संलग्न करें। कृपया सन्दर्भ शैली APA का पालन करें।
- **भाषा :** शोध पत्र हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत में स्वीकार किए जाएंगे।
- **फ़ॉण्ट :** हिन्दी एवं संस्कृत के लिए: यूनिकोड मंगल (Unicode Mangal) फ़ॉण्ट साइज़ 12;अंग्रेजी के लिए: टाइम्स न्यू रोमन (Times New Roman), फ़ॉण्ट साइज़ 12
- **फोर्मेट :** शोध पत्र MS Word फ़ाइल में होना चाहिए, जिसमें 1.15 लाइन स्पेसिंग हो।
- पूर्ण शोध पत्र gkunc2025@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजा जाना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ	
सारांश भेजने की अन्तिम तिथि	30 अक्टूबर, 2025
पञ्जीकरण की अन्तिम तिथि	30 अक्टूबर, 2025
पूर्ण शोधपत्र भेजने की अन्तिम तिथि	05 नवम्बर, 2025
विशेष आकर्षण	
कवि सम्मेलन	07 नवम्बर, 2025, सायं 04:00 बजे
गंगा आरती दर्शन	08 नवम्बर, 2025, प्रातः 05:00 बजे

❖ **पञ्जीकरण फ़ार्म :**
https://forms.gle/wgxFCJcry3EFj6bh9

समय पर प्राप्त उत्कृष्ट शोध पत्रों को एक सम्पादित पुस्तक के रूप में ISBN नम्बर के साथ प्रकाशित किया जाएगा।

University Introduction

Gurukula Kangri (Deemed to be University), located in Haridwar, is a historic educational institution in India. It was founded on the banks of the Ganges in Haridwar on March 4, 1902, by the great ascetic Swami Shraddhanand, a disciple of Maharishi Dayanand. Its main objective was to present a national alternative to Macaulay's English education system. This institution was started with the aim of reviving the ancient Indian Guru-Shishya (teacher-disciple) tradition and keeping students connected to their Vedic culture. Its goal is to provide a holistic education by integrating modern knowledge and science with vadic values and life principles, where students can develop their character and morals along with academic knowledge.

The education system of this university focuses on the physical, mental, and spiritual development of the students. Here, a unique combination of modern subjects like science, humanities, and management is seen alongside Vedic literature, Sanskrit, philosophy, and yoga. In recognition of its unique contribution to the field of education, it was granted the status of a 'Deemed-to-be-University' by the Government of India in 1962. Even today, this institution continues to be an important center as a confluence of Indian culture and modern education with its unique identity.

Concept of the Conference

Nineteenth-century India was gripped by social evils, superstition, caste-based discrimination, and subjugation. In such a time, Maharshi Dayanand Saraswati made a courageous effort to re-establish the original form of Vedic religion and culture. His clarion call, “Back to the Vedas,” was not merely a religious summons but the foundation for a comprehensive social and cultural renaissance. Maharshi Dayanand opposed idol worship, superstition, and orthodoxy, providing society with a life-vision based on reason, science, and wisdom. He advocated for women's education, widow remarriage, and equal rights, while struggling against pernicious customs like the caste system and untouchability. His great work, Satyarth Prakash, remains a cornerstone of social and religious discourse even today. In the field of education, inspired by Maharshi Dayanand's ideas, the Arya Samaj made an invaluable contribution to shaping the future citizens of the nation through Gurukuls and D.A.V. institutions. Furthermore, his thoughts also strengthened the consciousness of the Indian independence movement and nationalism. This conference is an endeavor to present a multifaceted interpretation of Maharshi Dayanand Saraswati's personality and legacy. It will feature an in-depth discussion on the relevance of his contributions to the Vedic renaissance, social reform, educational philosophy, and nation-building. The objective of this discourse is not only to understand history but also to derive guidance from his ideas for addressing the challenges of the present time.

Organising Committee

Patron

Prof. Dr. Hemlata K.
Hon'ble Vice-Chancellor
Gurukula Kangri (Deemed to be University)

Co-Patron

Prof. Vipul Sharma
Registrar
Gurukula Kangri (Deemed to be University)

Chairperson

Prof. Brahmdev
Dean
Faculty of Education & Training
Gurukula Kangri (Deemed to be University)

Convener

Dr. Ravinder Kumar
Assistant Professor
Gurukula Kangri (Deemed to be University)
Mob.: **9868077342**

Co-Convener

Dr. Deepak Kumar
President
GUHAR
Mob.: **9560931074**

Organizing Secretary

Dr. Bablu Vedalankar
Assistant Professor
Gurukula Kangri (Deemed to be University)
Mob.: **7500008505**

Hybrid Mode
Offline & Online

ओ३म्

ओ३म्

Gurukula Kangri

(Deemed to be University)

Haridwar, Uttarakhand

National Conference

on

Maharshi Dayanand Saraswati:

Pioneer of the Arsh Bharat Renaissance

07-08 November, 2025

Sponsored by

Indian Council of Historical Research

(Ministry of Education, Government of India)

Sub-themes of the Conference

1. Philosophical and Vedic Thought

- Maharshi Dayanand's style of Veda commentary and its uniqueness.
- "Back to the Vedas": An analysis of this slogan in its contemporary and present context.
- The establishment of monotheism and the logical refutation of idol worship.
- A philosophical evaluation of 'Satyarth Prakash' and its impact on Indian society.
- The concept of 'Arsh Bharat': The ideal form of India in the vision of Maharshi Dayanand.
- The establishment of Arya Samaj: Its objectives, structure, and role in nation-building.

2. Social Reform and Women's Empowerment

- Refutation of the caste system and support for the Varna system based on merit, action, and nature (Guna-Karma-Swabhava).
- Dayanand's contribution to the eradication of untouchability, child marriage, and other social evils.
- Maharshi Dayanand as a strong proponent of women's education and widow remarriage.
- The Shuddhi movement: A revolutionary step towards social equality.
- An evaluation of the social reform movements conducted by the Arya Samaj.

3. National Consciousness and Swaraj

- Maharshi Dayanand as the first proclaimer of 'Swabhasha' (own language), 'Swasanskriti' (own culture), and 'Swadesh' (own country).
- The first visionary of "Swaraj" and his influence on the Indian freedom struggle.
- The role of Dayanand's thoughts in the restoration of national self-esteem.
- The influence of Maharshi Dayanand's nationalist thinking on Indian freedom fighters.

4. Education and Institution Building

- Maharshi Dayanand's education policy: A synthesis of the Gurukul system and modern education.
- Indian Philosophy of Education and the National Education Policy – 2020.
- The contribution of D.A.V. (Dayanand Anglo-Vedic) educational institutions in India.
- 'Pakhand Khandini Pataka': An ideological attack on religious and social ostentation.

5. Contemporary Relevance

- The significance of Maharshi Dayanand's ideas in a global perspective.
- The role of Vedic philosophy in solving the national and global challenges of the 21st century.
- The relevance of the Vedic lifestyle in the context of environmental protection and human welfare.
- The utility of Dayanand's thoughts in building character and establishing moral values in modern India.

Note: Participants may choose any other topic relevant to the conference theme in addition to the subjects mentioned above.

Registration Fee

Category	Faculty Member	Research Scholar
Registratoion Fee	₹ 1000	₹ 750

Registration Form QR

Fee Payment QR (UPI)

Guidelines for the Research Paper

- The abstract of the research paper should be approximately 300-350 words 7 full research paper should be 3000-4000 words. It must clearly state the research objective, methodology used, and key findings. Please also include 4-5 keywords with the abstract. Please follow the proper citation style, APA.
- **Language:** Research papers will be accepted in Hindi, English, or Sanskrit.
- **Font:** For Hindi & Sanskrit: Unicode Mangal, font size 12.; For English: Times New Roman, font size 12.
- **Format:** The research paper should be in an MS Word file with 1.15 line spacing.
- Full research paper should be sent via e-mail to gkunc2025@gmail.com before 05 November, 2025.

Important Dates

Abstract Submission	October 30, 2025
Registration Last date	October 30, 2025
Full Paper Submission	November 05, 2025

Special Attractions

Kavi Sammelan	7 November, 2025, 4:00 pm
Ganga Aarti Darshan	8 November2025, 5:00 am

❖ Registration Form Link:
https://forms.gle/wgxFCJcry3EFj6bh9

Meritorious papers received on time will be published in an edited book with an ISBN No.